'दिनकर' के साहित्य में देशभक्ति की ज्वाला

Dinkar' Ke Sahitya Me Deshbhakti Ki Jwala

***Dr.Manjushree Menon, Associate Professor of Hindi, M.E.S.College of Arts, Commerce and Science, Bangaluru.**

भूमिका:-

रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना का उद्घोष करने वाले दिनकर चिर युवा हैं, उनके काव्य में अपार उर्जा और प्रेरणा के ओजस्वी स्वर हैं। राष्ट्रीयता के संदर्भ में राष्ट्र की भौगोलिक सीमा के प्रति निष्ठा होना प्राथमिक आधार है। भौगोलिक सीमा राष्ट्र की भूमि और उसकी पहचान निर्धारित करती है। भूमि विषयक देश-प्रेम मनुष्य में राष्ट्रीयता की पावन चेतना का आधार सिद्ध होता है। भू-भाग के आधार पर ही समस्त जन-समूह के प्रति सहज स्नेहिल भाव उभरता है। यदि भूमि की विभिन्न वस्तुओं के प्रति लगाव बढ़ता है तो प्रकृति से उदात्त तत्त्वों का विकास होता है। संस्कृति की भाव-तरंगिणी राष्ट्र की अनुप्रेरक आत्मशक्ति है। वस्तुत: संस्कृति राष्ट्र को महिमा मंडित करने वाली आत्मशक्ति है। मनुष्य का संस्कारित आदर्श विचार उसे मानवतावादी धरातल पर पहुँचा देता है और फिर अनुकरणीय राष्ट्रीयता का विकास होता है। संस्कृति के अन्तर्गत आदर्श, परम्पराएँ, रीति-रिवाज, साहित्य, संगीत और कला की बलवती भूमिका होती है। राष्ट्रीयता के लिए सांस्कृतिक एकता-अनिवार्य तत्त्व है और इसके विद्यमान रहने पर ही राष्ट्र में एकता की भावना जागृत होती है। राष्ट्रीय चेतना में धार्मिकता की बलवती भूमिका होती है। राष्ट्रीयता में व्यक्ति राष्ट्र की गौरव-गरिमा की रक्षा के लिए समर्पित होने के लिए तत्पर रहता है। राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में ऐतिहासिक संदर्भों की महती भूमिका होती है। देश के निर्माण में ऋषि, मुनियों, महात्माओं, मनीषियों के चिंतन और गतिशीलता का विशेष योगदान होता है। अतीत की गौरव-गाथा से जन-मन को सन्मार्ग पर गतिशील रहने की प्रेरणा मिलती है। निश्चय ही, राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्र की स्वतंत्रता, अखंडता और एकता की पावन-त्रिवेणी का प्रवाह होता है।

दिनकर' की राष्ट्रीय चेतना

दिनकर जी का अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। चीन से युद्ध के दिनों में 'दिनकर' की 'परशुराम की प्रतीक्षा' कविता अत्यन्त प्रसिद्ध हुई। इस कविता में देश के सैनिकों को अहिंसा त्यागकर पौरुष बनने का आह्वान किया गया है। सन् 1962 के चीनी-भारतीय-युद्ध के समय कविवर 'दिनकर' ने 'परशुराम की प्रतीक्षा' कविता में देश के पौरुष को जागृत करते हुए सिंह गर्जना की थी–

वैराग्य छोड़ बाहों की विभा संभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चन्द्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।
चढ़ तुंग शैल शिखरों पर सोम पियो रे,
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे।
(परशुराम की प्रतीक्षा)

'दिनकर' अपनी काव्य-चेतना के बारे में लिखते हैं-

क्रांति-धात्रि कविते! उठ अंबर में आग लगा दे।
पतन, पाप, पाखंड जले, जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।

'दिनकर' प्रेम, राष्ट्रीयता, मानवता और क्रांति के गायक हैं। उनकी कविता में राष्ट्र-व्यापी जागरण का स्वर है। एक ओर वे अपने अतीत से प्रभावित हैं तो दूसरी ओर वर्तमान की अधोगति से क्षुब्ध। प्राचीन गौरव के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा है। दिनकर की कविता में दीन, दु:खी और दलितों के प्रति सहानुभूति एवं संवेदना भी है। उन्होंने श्रमिकों और कृषकों के दयनीय जीवन का मार्मिक अंकन किया है। निम्न पंक्तियों में उनकी सहानुभूति एवं संवेदना द्रष्टव्य है-

आहें उठो दीन कृषकों की।
मजदूरों की तड़प पुकारें।
अरी गरीबी के लोहू पर,
खड़ी हुई तेरी दीवारें.....।

कवि ने हिमालय का मानवीकरण किया है। वास्तव में, कवि हिमालय के माध्यम से भारतीयों को संबोधित करते हुए कहते हैं-

ओ, मौन तपस्वी-लीन यती।
पत भर को तो कर दृगोन्मेष।
रे ज्वालाओं से दग्ध, विकल
है तड़प रहा पद पर स्वदेश
सुख-सिन्धु, पंचनद, ब्रह्मपुत्र,
गंगा, यमुना की अमिट-धार,
जिस पुण्यभूमि की ओर बही,
तेरी विगलित करुणा उदार।
(हिमालय)

कविवर दिनकर कहते हैं- हे हिमालय, देश के कितने वीर पुरुष रूपी रत्न हमसे छिन गए, जो स्वतंत्रता की चिनगारी जलाए रहे। भारत का अनंत वैभव चला गया। हिमालय समाधिस्थ होकर साधना ही करता रहा और प्यारा देश भारत इन वीर रत्नों से रहित हो गया। महाभारत काल में दुःशासन ने केवल एक द्रौपदी के बाल खींच लिये थे, जिसके कारण महाभारत के भयंकर युद्ध की योजना बनाई गई और आज न जाने कितनी स्त्रियों के सतीत्व को लूटा जा रहा है और कितनी कन्याओं का अपहरण हो रहा है, किन्तु फिर भी किसी के मन में पीड़ा नहीं कि इन अत्याचारों का प्रतिरोध किया जाए। चित्तौड़ से पूछो कि जरा-सा अत्याचार होने पर या किसी नारी की ओर किसी की कुदृष्टि होने पर बड़े-बड़े संग्राम रचे गए और नारियाँ जौहर व्रत करके जीते-जी अपने प्राणों की बलि दे दिया करती थीं। कवि ने इसी पीड़ा को निम्न शब्दों में प्रकट किया है-

कितनी मणियाँ लुट गई? मिटा
कितना मेरा वैभव अशेष।
तू ध्यान-मग्न ही रहा, इधर
वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।
कितनी द्रौपदियौं के बल खुले?
किन-किन कलियों का अंत हुआ?
कह हृदय खोल चित्तौड़! यहाँ
कितने दिन ज्वाल-बसंत हुआ?
(हिमालय)

हिमालय का गौरव-गान करके देशोद्धार की प्रेरणा देते हुए कवि भारत के अतीत वैभव और वीर भाव को जगाना चाहता है। कवि हिमालय को संबोधित करके कहता है कि हे हिमालय! आज इस समय हमें अर्जुन और भीम तथा उनके क्रमशः गांडीव धनुष और गदा की आवश्यकता है। उन्हें लौटा दे। आज युद्ध में पूर्ण पराक्रम दिखाकर शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाले योद्धाओं की आवश्यकता है। कवि शंकर के आवास-स्थल हिमालय से प्रार्थना करता है कि तू शिवजी से प्रार्थना कर कि वे पुनः एक बार तांडव नृत्य करें जिससे सारे भारत में 'हर-हर', 'बम-बम' की ध्वनि गूँज उठे जिसकी अंगड़ाई लेकर सारी भूमि काँप उठे अर्थात् सर्वत्र भयंकर हलचल मच जाए। यथा–

रे रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनकी स्वर्ग धीर,
पर, फिरा हमें गांडीव - गदा,
लौटा दे अर्जुन - भीम वीर।
कह दे शंकर से, आज करें,
के प्रलय - नृत्य फिर एक बार।
सारे भारत में गूँज उठे,
हर - हर, बम - बम का फिर महोच्चार।
(हिमालय)

कवि देश के लोगों को जागृत करते हुए कहता है कि लक्ष्य पास आ जाने पर थक कर बैठ जाना उचित नहीं है -

दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर पुण्य - प्रकाश तुम्हारा।
लिखा जा चुका अनल - अक्षरों में इतिहास तुम्हारा।
जिस मिट्टी ने लहू पिया, वह फूल खिलायेगी ही,
अम्बर पर धन बन छाएगा ही उच्छवास तुम्हारा।
और अधिक ले जाँच, देवता इतना क्रूरर नहीं है,
थककर बैठ गये क्यों भाई! मंजिल दूर नहीं है।
(आशा का दीपक)

उक्त कविता का आशय यह है कि - जिस भारत भूमि की स्वतंत्रता के लिए इतने बलिदान हुए, उसमें स्वतंत्रता का फूल खिलकर ही रहेगा। यह आशा अवश्य फलवती होगी। हमारी पीड़ा जन्य साँसें आकाश में बादल बनकर अवश्य छायेगी जिससे स्वतंत्रता के रूप में सुखों की वर्षा होगी। हे भाई, अब लक्ष्य निकट ही है, अत: थक कर मत बैठो। तुम साधना - श्रम करो जिससे तुम शीघ्र लक्ष्य की प्राप्ति कर सको।

कविवर दिनकर ने ओजस्वी शब्दों में राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में अतीत का गौरव - गान किया है। 'रेणुका' में संकलित 'हिमालय' कविता में वे कहते हैं -

तू पूछ अवध से, राम कहाँ? वृंदा घनश्याम कहाँ?
ओ मगध! कहाँ मेरे अशोक? वह चन्द्रगुप्त बलधाम कहाँ?
री कपिलवस्तु! कह बुद्ध देव के ये मंगल उपदेश कहाँ?
तिब्बत, इरान, जापान, चीन तक गये हुए संदेश कहाँ?

वस्तुत: कविवर 'दिनकर' संवेदनशील कवि हैं। उनका अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। उन्होंने सामाजिक उत्थान - पतन और आंदोलन से प्रभावित होकर काव्य - सृजन किया है। देश पर जब - जब संकट के बादल घिरते हैं, मानव - जीवन संघर्ष में जूझने लगता है, तब तब

'दिनकर' की कविता जन-मानस में ऊर्जा का संचार करती है। उनकी कविता देश की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, परम्परा और आदर्श आदि की अनूठी एकता की आधारभूमि प्रस्तुत करती है।

निष्कर्ष

वस्तुत: कविवर 'दिनकर' संवेदनशील कवि हैं। उनका अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। उन्होंने सामाजिक उत्थान-पतन और आंदोलन से प्रभावित होकर काव्य-सृजन किया है। देश पर जब-जब संकट के बादल घिरते हैं, मानव-जीवन संघर्ष में जूझने लगता है, तब तब 'दिनकर' की कविता जन-मानस में ऊर्जा का संचार करती है। उनकी कविता देश की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, परम्परा और आदर्श आदि की अनूठी एकता की आधारभूमि प्रस्तुत करती है।

संदर्भ ग्रंथ:-

- दिनकर एक शताब्दी, डॉ स्वयंवती शर्मा, डॉ, दिनेश कुमार.
- राष्ट्रकवि दिनकर एवं उनकी काव्य कला, शिखर चन्द्र जैन
- दिनकर का वीरकाव्य, धर्मपाल सिंह आर्य
- दिनकर व्यक्तित्व और रचना के नये आयाम, डॉ गोपाल राय सत्यकाम
- दिनकर की काव्यभाषा, डॉ यतीन्द्र तिवारी
- हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नागेन्द्र